Government is implementing a ket Development Assistance Scheand spends over Rs. 60 crores anally from the Cenral Budget with a matching contribution from the State Governments to promote marketing of handloom products through eligible marketing agencies as a measure to promote the handloom sector.

उत्तर प्रदेश में वस्त्र मिलें

2657. **मौलाना ओबेदुल्ला खान आज़मी :** क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) केन्द्रीय सरकार के अधीन उत्तर प्रदेश की कौन-कौन सी वस्त्र मिलें हैं और ये कहां-कहां स्थित हैं ;

(ख) उनकी मौजूदा वित्तीय स्थिति क्या है ;

(ग) वस्त्र उद्योग की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए क्या-क्या प्रयास किए गए हैं और उनका क्या परिणाम रहा है ;

(घ) इस समय इस उद्योग को कौन-कौन सी प्रमुख समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ; और

(ङ) इन समस्याओं के समाधान के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अशोक गहलोत) : (क) और (ख) एन टी सी (उ० प्र०) लि० के अधीन वस्त्र मिलों के नाम, स्थिति तथा लाभ/घाटे की स्थिति को दर्शाने वाला एक विवरण संलग्न है। **(नीचे देखिये)**

(ग) से (ङ) एन टी सी के अधीन वस्त्र मिलों के सामने पेश आ रही समस्याओं में शामिल हैं :-अप्रचलित मशीनें, कम उत्पादकता, फालतू श्रमिक बल, कम क्षमता उपयोग, अपर्याप्त आधुनिकीकरण आदि। एन टी सी ने इन मिलों का पुनरुद्धार करने के लिए एक नीति बनाई है जिसमें आधुनिकीकरण, श्रमिक सुव्यवस्थीकरण वित्तीय पुनर्निर्माण आदि शामिल हैं।

विवरण

एन टी सी (उ०प्र०) लि० के निबल लाभ/घाटे

क्र०सं०	विवरण	1991–92
		अनन्तिम घाटे (करोड़ रुपये में)
1.	श्री विक्रम काटन मिल्स, लखनऊ	–2.06
2.	बिजली काटन मिल्स, हाथरस	–1.99
3.	स्वदेशी काटन मिल्स, माउनाथ भंजन	–1.18
4.	रायबरेली टेक्सटाइल मिल्स, रायबरेली	–0.94
5.	स्वदेशी काटन मिल्स, नैनी	–2.39

क्र०सं०	विवरण	एन० टी० सी (उ० प्र०) लि० के निवल लाभ/घाटे 1991–92 अनन्तिम घाटे (करोड़ रु० में)
6.	मयूर मिल्स, कानपुर	–7.17
7.	न्यू विक्टोरिया मिल्स, कानपुर	–7.70
8.	लोर्ड कृष्णा टेक्सटाइल मिल्स, सहारनपुर	–2.13
9.	स्वदेशी काटन मिल्स, नैनी	–9.83
	योग	–35.39
(ख)	प्रबंधित मिलें	
1.	लक्ष्मी रतन काटन मिल्स, कानपुर	–14.67
2.	अर्घ्टन मिल्स, कानपुर	–12.01
		–26.68
	कुल योग	–62.07

पटसन की बोरियों का भंडार

2658. **श्री वीरेन्द्र जे० शाह :**
डा० जितेन्द्र कुमार जैन :

क्या वस्त्र मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 12 जून, 1992 के "फाइनेन्शियल एक्सप्रैस" "जूट इंडस्ट्री टू सीक गवर्नमेन्ट हेल्प फार नेगोशियेशन" शीर्षक से छपे समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह सच है कि देश में प्रतिमाह लगभग 8000 टन पटसन की बोरियों का उत्पादन खपत से अधिक होता है ;

(ग) यदि हां, तो जून, 1992 की स्थिति के अनुसार देश में पटसन की बोरियों का कुल कितना भंडार था; और

(घ) सरकार ने भंडार के सदुपयोग के लिए क्या व्यवस्था की है ?

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री अशोक गहलोत) : (क) जी हां।

(ख) पटसन बोरों के उत्पादन और खपत में अलग-अलग महीने अन्तर रहता है। ऐसा अनुमान है कि जून, 1992 में पटसन बोरों का उत्पादन खपत से 8000 टन अधिक रहा।

(ग) ऐसा अनुमान है कि जून, 1992 के अन्त तक पटसन मिलों के पास 43,000 टन पटसन बोरे पड़े हुए थे।